'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019)
Peer Reviewed & Indexed Journal
Vol. 7, Issue 2
E-ISSN : 2348-7143
April-May-June 2020

बदलता भारतीय परिदृश्य : समकालीन कविता के सरोकार

डॉ. साईनाथ उमाटे
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर
(महाराष्ट्र)
ईमेल- umatesai85@gmail.com
मो.9763334871

आज के बदलते भारतीय परिदृश्य में समकालीन हिंदी कविता व्यक्ति की विश्वव्यापी स्वाधीनता, उसके वैचारिक विस्तार और नए संस्कार संदर्भों को प्रतिध्वनित करती है | हर रचनाकार समय एवं समाज के तकाजे को सामने रखकर अपने काल के दस्तावेज को उद्घाटित करता है तथा उनकी रचना अपने काल से बद्ध होती है | समकालीन कविता के प्रतिष्ठित कवि अरूण कमल अपनी आलोचनात्मक पुस्तक 'गोलमेज' में लिखते हैं – "केवल यही एक तथ्य कि किसी भी कृति की रचना एक चुने हुए काल-क्षण में ही संभव है सिद्ध करता है कि प्रत्येक रचना अपने काल से बद्ध है | यह उसकी समकालीनता है | और यह समकालीनता उस रचना में व्यक्त उस काल के जीवन का अनूठापन है जो मनुष्य के जीवन में उसके पहले कभी प्रगट ही नहीं हुआ था | जीवन लगातार बदल रहा है | नदी का पानी बदल रहा है और नदी के पानी में भीगता हुआ हाथ भी निरन्तर बदल रहा है | एक श्रेष्ठ रचना उन तत्वों को पकडती है जो सर्वाधिक नये और इसलिए अनूठे हैं | जो रचना जितनी तीव्रता और जितने विस्तार से इस नयेपन को व्यक्त करती है, वह उतनी ही श्रेष्ठ होती है और उतनी ही अधिक समकालीन | मनुष्य के बाह्य तथा आन्तरिक जगत, सूक्ष्म मनोभावों, रागों, भावावत्मक घात-प्रतिघातों और उसके होने मात्र में जो सर्वथा नया है, और इसीलिए जो आजतक किसी पूर्ववर्ती रचना की पहुँचे के बाहर भी, उसे ही एक रचना ढूँढती और व्यक्त करती है | इस अर्थ में वह सर्वथा कालबद्ध और समकालीन है |"[1]

प्राय: किसी भी काल की किसी रचना की श्रेष्ठता का पैमाना उसकी समकालीनता होती है | वास्तव में समकालीनता बदलते समय के परिदृश्य के साथ एक गतिशील संबंध बनाती हुई चलती है | सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक राजेश जोशी समकालीनता को परिभाषित करते हुए लिखते हैं – "एक रचनाकार के लिए समकालीनता अपने समय में रहने और रचना करने भर की सुविधा नहीं हो सकती | यह सहज ही प्राप्त या प्रदत्त विशेषण भी नहीं हो सकता | समकालीनता को अर्जित करना होता है | अपने समय के साथ मुठभेड करते हुए, उसमें हस्तक्षेप करते हुए, हर रचनाकार को अपनी समकालीनता स्वयं अर्जित करनी होती है | समकालीनता सिर्फ रचना की अन्तर्वस्तु से जुडा प्रश्न नही है | यह शिल्प और भाषा का भी प्रश्न है | शिल्प और भाषा में पुरानेपन के साथ एक नई अन्तर्वस्तु लेकर की गई रचना समकालीन नहीं बन सकती | समकालीनता निजी काव्य मुहावरा नहीं है जिसे एक बार साधकर हमेशा के लिए काम चलाया जा सके | वस्तुत: हर महत्त्वपूर्ण रचना अपनी समकालीनता को अर्जित करने की एक सतत प्रक्रिया है और प्रविधि भी | समकालीनता को अर्जित करना और करते रहना, एक सतत प्रक्रिया है | अगर यह प्रक्रिया किसी रचनाकार में रूक जाती है या रचनाकार ही उसके प्रति उदासीन हो जाता है तो बहुत संभव है कि अपने समय में सबसे अधिक समकालीन

रहा रचनाकार, रचनारत रहते हुए भी देखते-ही-देखते अपनी अगली पीढी के रचनाकारों के लिए और रचना परिदृश्य के लिए समकालीन न रह जाए |"[2]

स्पष्ट है कि किसी रचना की समकालीनता अपने बदलते परिदृश्य की बडी समस्याओं के विरूद्ध एक प्रतिपक्ष है | अगर कोई रचना अपने बदलते परिदृश्य की चुनौतियों से टकराते हुए प्रतिपक्ष तलाश करती है, तभी समकालीन हो सकती है | समकालीन कविता का फलक बहुत विस्तृत है | सन् 1970 से लेकर समकालीन कविता की पृष्ठभूमि अधिक दृढतर बनती गई है | कवि मुक्तिबोध से लेकर नागार्जुन तक तथा अरूण कमल से लेकर विनोदकुमार शुक्ल विरेन डंगवाल, आलोकधन्वा, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अनामिका, कासायनी, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, एकांत श्रीवास्तव, कुमार अंबुज आदि तक आते-आते समकालीन कविता का वैचारिक एवं संवेदनशील भावविश्व वर्तमान के कालबोध का सच्चा साक्षी बनकर अपनी उपस्थिति दर्शाता है | समकालीन हिंदी कविता एकाधिक विचारधाराओं का संगम रही है | उसमें एक समय में, विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्तियों एवं समुहों के साथ एक से अधिक विचारधाराओं का सृजन होता गया |

"समकालीन कविता पढते हुए सबसे पहले ध्यान एकाग्र होता है इस कविता के विद्रोही स्वभाव और तेवर पर | विद्रोही इसकी अन्दरूनी बुनावट है, इसके भीतर से फूटा है | जिस जिंदगी और मनुष्य को लेकर यह कविता लिखी जा रही है, वह अन्य किसी विकल्प की गुँजाइश कहा देती है? इस विद्रोह के सैकडो रूप, प्रवृत्तियाँ, पहलू, दिशाएँ और आयाम इधर की कविता में मिलेंगे | इसे आप आज की कविता की धूरी मान सकते हैं |"[3] अर्थात समकालीन कविता का केन्द्रभूत मूल्य प्राय: विद्रोह रहा है | साधारणत: मानव अमानवीय परिस्थितियों के विरूद्ध विद्रोह करता है | इसी दृष्टि से देखें तो समकालीन कविता उन कवियों की विद्रोही कविता है | समकालीन कवियों ने रूढियों को त्याग कर बदलते भारतीय परिदृश्य को नया चिंतन दिया है | नए विचार, नई संवेदना और नए ढंग की अभिव्यक्ति समकालीन कवियों का विशेष रही हैं |

समकालीन कवि ने विद्रोह के साथ साधारण व्यक्ति के आक्रोश एवं दु:ख को स्वर दिया है | साधारण की दु:खात्मक गाथाओं का यथार्थ अपनी काव्यधारा के माध्यम से परिचित कराने का यथासंभव प्रयास किया है | इससे सामाजिक चेतना में एक नया पहलू जुडा है | कवि अरूण कमल की कविताएँ इसी पृष्ठभूमि पर विकसित हुई काव्यधारा है | उनकी कविताओं में बदलते भारतीय परिदृश्य का प्राकृतिक सौंदर्य, मनुष्य-जीवन सौंदर्य तथा उसकी सूक्ष्म अनुभूति की चेतना दृष्टिगोचर होती है | कवि की 'स्नानपर्व' शीर्षक कविता प्राकृतिक परिवेश में मजदूर के जीवन से जुडी हुई घटना है –

धो लेने दो
मल मल कर साफ कर लेने दो
नदी की काली मिट्टी से
देह की मैल
नदी, तुम अपनी धार को
लटाई पर लपेटे धागे-सा ढील दो
पटा दो उस मजदूर का शरीर
उस खेत को पटा दो |[4]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में मजदूर के स्नान के स्वाभाविक दृश्य में कवि ने मजदूर के जीवन के अभाव को तथा उसके विवश अस्तित्व को नदी की काली मिट्टी या मटमैली धार में बाँधने का प्रयास किया है | अर्थात

प्रस्तुत काव्य में अनेक युगों की मिट्टी की गंध है | युगों से मजदूर के जीवन की कर्मनिष्ठता का परिचय बदलते भारतीय परिदृश्य में आज परिचय का पात्र बन गया है |

समकालीन हिंदी कविता के सरोकार हमेशा अपने समय, समाज एवं संस्कृति से जुडे रहे हैं | समाज परिवर्तन का वह महत्त्वपूर्ण जरिया रही है | अत: आज के बदलते भारतीय परिदृश्य में समकालीन कविता अब और अधिक सतर्क होती दिखाई दे रही है | चूँकि समय एक निरपेक्ष स्थिती है | यह न सहृदयी होती है न निर्मम| यह एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है और उस क्रम में जो भी स्थितियाँ उपस्थित होती हैं वे या तो हमारे अनुकूल होती है या प्रतिकूल | मानवीय संवेदनाओं की सही अभिव्यक्ति समकालीन कविता में की गई है | उसमें प्रकृति, पर्यावरण, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, साम्प्रदायिकता, मनुष्य तथा विज्ञापन जगत की दुनिया, बच्चों की दुनिया, स्त्री, दलित और आदिवासी आदि के संदर्भ आ रहे हैं | इस प्रकार बदलते समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप समकालीन कविता का परिदृश्य बदलता हुआ दिखाई दे रहा है |

पूँजीवाद तथा पश्चिमी सभ्यता संस्कृति ने किस तरह हमारी संस्कृति का क्षरण करने का काम किया है | समकालीन कविता इसका जीवंत दस्तावेज है | आज के बदलते सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेशों के कारण साहित्य में निर्मित मानव तथा समाज में जो दुरूहता आयी है यह उसकी प्रतिछाया कही जा सकती है यानी बदलते सामाजिक परिदृश्य के साथ आज की कविता को भी समझा जा सकता है | पिछली कुछ शताब्दी में समय कितनी जल्दी परिवर्तित हो रहा है, उसे देखना हो तो अरूण कमल की 'हाट' शीर्षक कविता देखना चाहिए |

बदलते भारतीय परिदृश्य में एक रचनाकार को क्या करना चाहिए ? इतिहास गवाह है कि ऐसे समय में एक रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से सार्थक हस्तक्षेप करने का प्रयास करता है | आज के दौर में समकालीन कविता की भूमिका बहुत मतत्त्वपूर्ण है, उसमें आज का समय परिलक्षित हो, यह जरूरी है | यह उस कविता का समकालीन सरोकार है | समकालीन कविता के प्रतिष्ठित कवि आलोकधन्वा 'गोली दागो पोस्टर' शीर्षक कविता में कहते हैं –

जिस जमीन पर
मैं अभी बैठकर लिख रहा हूँ
जिस जमीन पर मैं चलता हूँ
जिस जमीन को मैं जोतता हूँ
जिस जमीन में बीज बोता हूँ और
जिस जमीन से अन्न निकालकर मैं
गोदामों तक ढोता हूँ
उस जमीन के लिए गोली दागने का अधिकार
मुझे है या उन दोगले जमींदारों को जो पूरे देश को
सूदखोर का कुत्ता बना देना चाहते हैं
यह कविता नहीं है
यह गोली दागने की समझ है
जो तमाम कलम चलानेवालों को
तमाम हल चलानेवालों से मिल रही है |[5]

प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों के माध्यम से जहाँ सामान्य जनता का अपनी ही बनाई हुई व्यवस्था से संघर्ष दिखाई देता है वहीं आम आदमी की हैसियत से इसके प्रति संषर्ष ही नहीं बल्कि एक सशस्त्र संघर्ष की

मनोकामना प्रकट होते हुए देखते हैं | आर्थात यह काव्य-पंक्तियाँ व्यक्ति को जगाने का काम करती है | जिससे देश, समाज तथा व्यवस्था की परिस्थितियों के प्रति उसकी समझ को पुष्ट करना है | ऐसे ही विसंगतियों पर करारा प्रहार करना एक कवि का सामाजिक सरोकार भी है और कविता के साथ न्याय भी | यद्यपि बदलते भारतीय परिदृश्य की पेचीदगी को समझकर मुठभेड की रणनीति तलाशने की हकीकत से जनता को आगाह करने और विरोध के लिए तैयार करने का काम समकालीन कविता को करना होगा |

समकालीन कविताओं में आम आदमी की मौजूदगी बडी शिद्दत के साथ मिलती है | कवि इस आदमी से संवाद करता है | यह संवाद आत्मीयतापूर्ण है | अर्थात इसी क्रम में समकालीन कविताओं में वास्तविकता के विविध रूप उभरकर आते है |

जीवन की विडबनाओं का चित्रण होता है | इस दृष्टि से देखा जाए तो श्रमशील मनुष्य के प्रति समकालीन कवियों की प्रतिबद्धता औरों से भिन्न है | कहना न होगा कि समकालीन कवियों ने आम आदमी या मेहनतकश लोगों के जो चित्र अंकित किए है वहाँ सहानुभूति नहीं बल्कि संवेदना है | तभी तो कुमार अंबुज जैसे कवि के अंतर्मन में सुप्त व्यक्ति के पीछे छिपे अथाह दु:ख को जानने-समझने की गहरी ललक दिखाई देती है | 'मानकीकरण' शीर्षक कविता में कवि ने कहा –

एक सरीखा आदेश आता है लोकतंत्र और तानाशाही में
जिसे अमल में लाने के लिए सक्रिय होता है
प्रशासन हू-ब-हू एक जैसा
एक जैसी यातना के दौर से गुजरता है आदमी
सीलन, बदबू, कामना और आशा के गलियारे में
घिसटते हुए मुश्किल है पहचान पाना
कि वह किस विकसित
या अविकसित सभ्यता में मारा जा रहा है
या रखा जा रहा है जीवित
ऐसे ही किसी अगले गलियारे में मार देने के लिए
एक-सी निर्जनता है, एक जैसी लाचारी
एक-सा सर्कस, एक जैसी छलाँग ![6]

समाज का अस्तित्व मानव व मानवता से है | चूँकि बदलते भारतीय परिदृश्य में यह स्थिति दृष्टिगोचर नहीं होती | साम्राज्यवादी दौर में मानवतावादी मूल्य समाज से लगभग गायब होते जा रहे है | मनुष्य आत्मकेन्द्रित होते जा रहा है | अपने सामाजिक सरोकार को आज का मनुष्य विस्मृत कर बैठा है| इसी पीडा को समकालीन कविता के प्रतिनिधी कवि आलोकधन्वा 'जनता का आदमी' शीर्षक कविता में व्यक्त करते हैं –

बर्फ काटने वाली मशीन से आदमी काटने वाली मशीन तक
कौंधती हुई अमानवीय चमक के विरूद्ध
जलते हुए गाँवों के बीच से गुजरती है मेरी कविता;
तेज आग और नुकीली चीखों के साथ
जली हुई औरत के पास
सबसे पहले पहुँचती है मेरी कविता |[7]

प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों से ज्ञात होता है कि बदलते भारतीय परिदृश्य में आलोकधन्वा जैसे कुछ साहसी लोग संघर्ष करते हुए सृजनरत है | कवि इस ह्रदयहीन अमानवीय व्यवस्था का विरोधी है | दरअसल स्वतंत्रता के पश्चात जिस संवैधानिक व्यवस्था को हमने अपने सर की छत समझा था वह आग के गोले बरसाने वाला निरा आसमान साबित हुआ |

निष्कर्षत:

हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता बडे ही अच्छे तरीके से बदलते भारतीय परिदृश्य के समय और समाज के मूल्यांकन पर बल देती है | चूँकि समकालीन कविता मानवीय सरोकारों से जुडी हुई कविता है जो स्त्रियों, दलितों, आदिवासियों, पीडितों आदि को पूरी मानवीय गरिमा और संवेदनशीलता के साथ चिन्हित करती है | समान पक्षधतरा समकालीन कविता का केन्द्रिय सरोकार है | उसकी अपनी जमीन बहुत ही उपजाऊ एवं विस्तृत है | जो समय एवं समाज को जीवन्त बनाती है | अंतत: समकालीन कविता सृजनात्मकता के उहापोह से मुक्त मानवीय जीवन से गहरा सरोकार रखती है | जो बदलते भारतीय परिदृश्य में बेहद महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक तत्व है | राजेश जोशी के शब्दों में कहा जाए तो – "कविता सम्भवत: हमारे समय की वह आखिरी आवाज है जिसे बाजार और हिंसा अभी तक मलिन और गुमराह नहीं कर सकी है |[8]"

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गोलमेज – अरूण कमल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम सं.2009, पृ.सं.133-134
2. समकालीनता और साहित्य – राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला स.2010, पृ.सं.30.
3. समकालीन कविता के बारे में – डॉ.नरेन्द्र मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1994, पृ.सं.13-14.
4. कवि ने कहा – अरूण कमल, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.2012, पृ.सं.28
5. दुनिया रोज बनती है – आलोकधन्वा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति, 2009, पृ.सं.29.
6. अतिक्रमण – कुमार अंबुज, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.2002, पृ.सं.61
7. दुनिया रोज बनती है – आलोकधन्वा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति, 2009, पृ.सं.30.
8. समकालीनता और साहित्य – राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला सं.– 2000, पृ.सं.19.